रुपरेखा

- प्रस्तावना
- अधिगम (learning)का अर्थ
- थार्नडाइक का सीखने का सिद्धांत
- थार्नडाइक के सीखने का सिद्धांत का प्रयोग
- थार्नडाइक का सम्बन्धवादी सिद्धांत
- अधिगम के नियम
- थार्नडाइक के सीखने के सिद्धांत का शिक्षा में महत्व
- थार्नडाइक के सिद्धांत की आलोचना
- निष्कर्ष

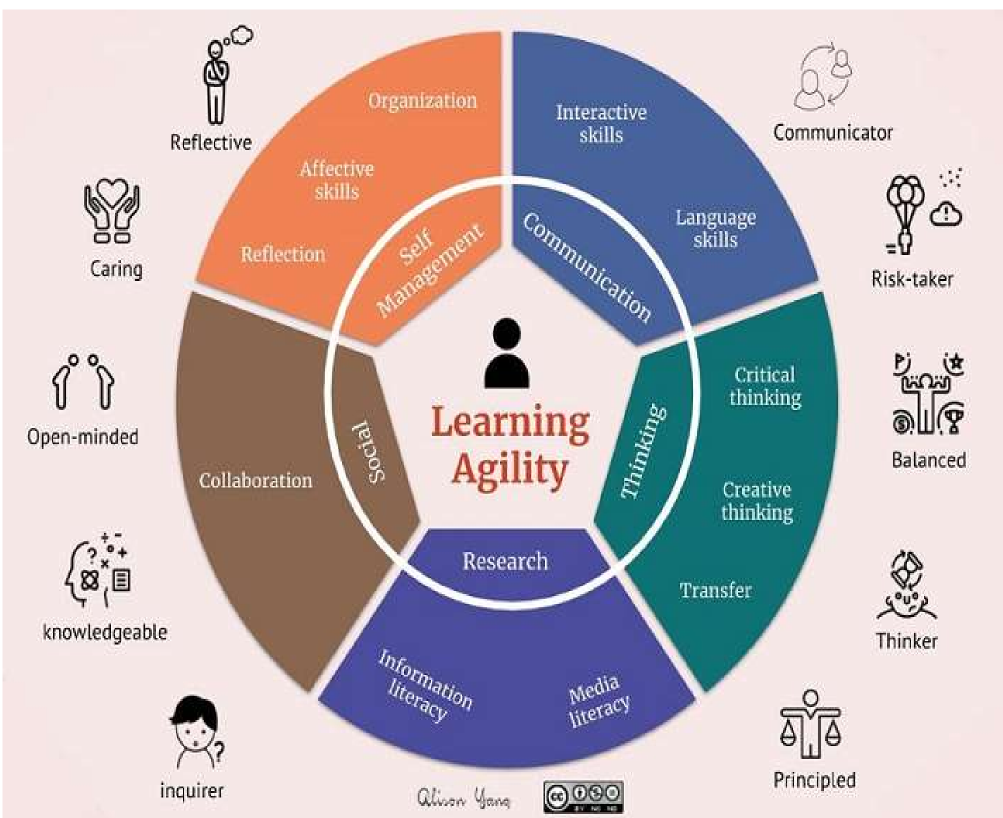

प्रस्तावना :- अधिगमन का अर्थ होता है सीखना हम मनुष्य अपने पुरे जीवन कल में कुछ न कुछ किसी न किसी व्यक्ति हो या पशु से सीखता रहता है और यह सिखने की प्रक्रिया कभी भी समाप्त नहीं होती है अधिगमन से अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा हमारे व्यवहार में परिवर्तन होता है मनुष्य जीवन भर सीखता रहता है जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो जाती यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से चलती रहती है इससे व्यक्ति में ज्ञान अनुभव आदते रुचियों का विकास होता है "थार्नडाइक ने विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये। जिनमें से थार्नडाइक का बिल्ली के प्रयोग काफी प्रचलित हैं"|

अधिगम (learning)का अर्थ –

अधिगमन को शिक्षा मनोविज्ञान का दिल कहा जाता है अधिगमन का शिक्षा के छेत्र में विशेष स्थान बताया गया है क्यों की शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य सीखना है हम सभी जानते है मनुष्य का जीवन जन्म से लेकर मित्यु तक सीखना ही है घर हो या स्कुल एवं अपने आस पास के वातावरण से मनुष्य कुछ न कुछ सीखता ही रहता है और अपना विकास करता रहता है आज कल हम देखते है की सिखने की प्रक्रिया व्दारा दुनिया बहुत छोटी हो गई है विभिन्न प्रकार के अनुभव की वजह से मनुष्य के स्वाभाविक व्यवहार में परिवर्तन होता है उसे अधिगमन कहते है |

उदा. :- जब कोई छोटा बच्चा जलती हुई दिया को हाथ लगता है तो उसका हाथ जल जाता है (उसे कड़वा अनुभव होता है) वही जब वह दुरी बार वह जलती हुई की वास्तु की तरफ हाथ बढ़ाने का साहस नहीं करता है |

थार्नडाइक का सीखने का सिद्धांत- थार्नडाइक ने विभिन्न प्रकार के

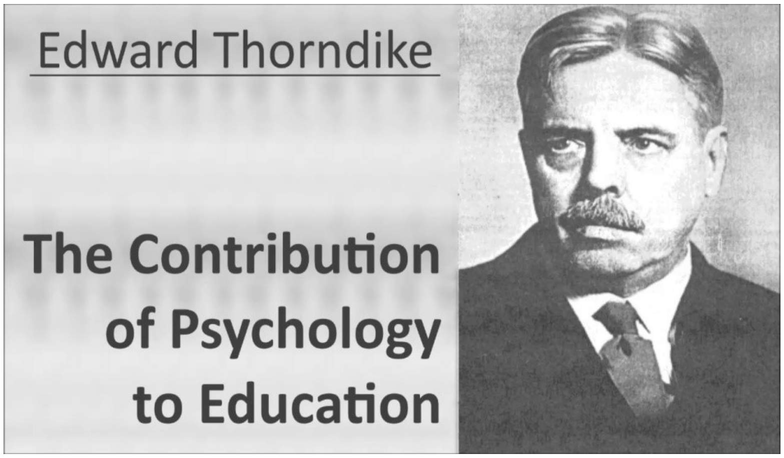

प्रयोग किये। जिनमें से थार्नडाइक का बिल्ली के प्रयोग काफी प्रचलित हैं। आज आपको थार्नडाइक का सीखने के सिद्धांत की जानकारी प्रदान करेगा। जिसके अंतर्गत आपको थार्नडाइक के सीखने के सिद्धांत का अर्थ, थार्नडाइक का बिल्ली का प्रयोग, थार्नडाइक के सिद्धांत का शिक्षा में महत्व, थार्नडाइक के सिद्धांत की आलोचना आदि के बारे में जानकारी दी जाएगी।,

थार्नडाइक ने अपने प्रयोगों द्वारा यह बताया कि यदि कोई भी किसी कार्य को करता हैं। तो उसके समक्ष एक विशेष प्रकार की स्तिथि या उद्दीपक होता हैं। वह उद्दीपक किसी विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया करने के लिए हमे प्रेरित करता हैं। ऐसे में एक विशिष्ट उद्दीपक का विशिष्ट प्रतिक्रिया से सम्बन्ध स्थापित हो जाता हैं।

जिसे **S-R bond** द्वारा व्यक्त किया जाता हैं। इसके सम्बद्ध के पश्चात यदि कोई व्यक्ति किसी उद्दीपक का अनुभव करता हैं। तो उससे सम्बन्धित विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया या व्यवहार करता हैं।

थार्नडाइक के सीखने का सिद्धांत का प्रयोग

थार्नडाइक प्रयास एवम त्रुटि के सिद्धांत के जनक ने विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये। उनमे से एक भूखी बिल्ली को पिजड़े में बंद करने का प्रयोग भी काफी प्रचलित हैं। इस प्रयोग में एक भूखी बिल्ली हैं। जो पिजड़े में बंद है। पिजड़े के बाहर एक मछली का टुकड़ा रखा हुआ हैं। उस मछली के टुकड़े को प्राप्त करने के लिए मछली अनेक प्रकार के प्रयास करती हैं। अंत मे बिल्ली पिजड़े को खोलकर मछली के टुकड़े को पाने में सफल हो जाता हैं।

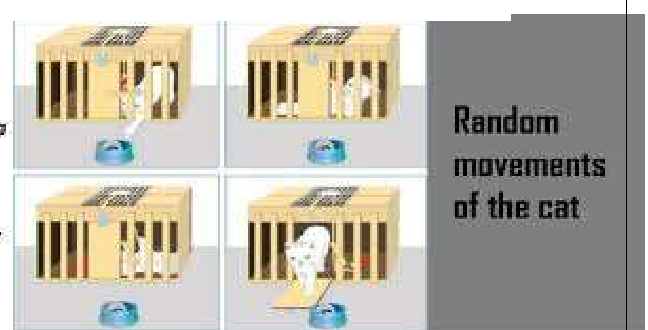

इस सिद्धान्त के अंतर्गत हमारे द्वारा की जाने वाली अंडक क्रोयाये सम्बन्धितहैं। जैसे – बालक का चलना सीखना, जूते पहनना, चम्मच से खाना, आदि क्रियाएं हैं। बड़े होने पर वही बालक धीरे धीरे गाड़ी चलाना, क्रिकेट खेलना आदि चीजे सीखता हैं।

थार्नडाइक का सम्बन्धवादी सिद्धांत

थार्नडाइक के सम्बन्धवादी सिद्धांत को अन्य नाम से भी जाना जाता हैं। जो निम्नलिखित हैं।

1. थार्नडाइक का सम्बन्धवाद
2. सम्बन्धवाद का सिद्धान्त
3. उद्दीपन प्रतिक्रिया सिद्धान्त (S-R) theory
4. सीखने का सम्बंध सिद्धान्त
5. प्रयत्न और भूल का सिद्धांत

अधिगम के नियम

अधिगम के नियमो को दो रूपो में बाटा गया है। इन दोनों नियमो के प्रतिपादक थार्नडाइक है।

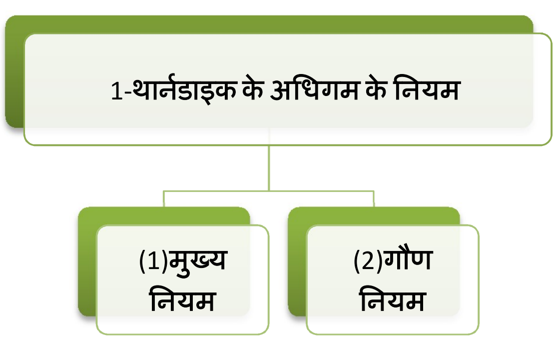

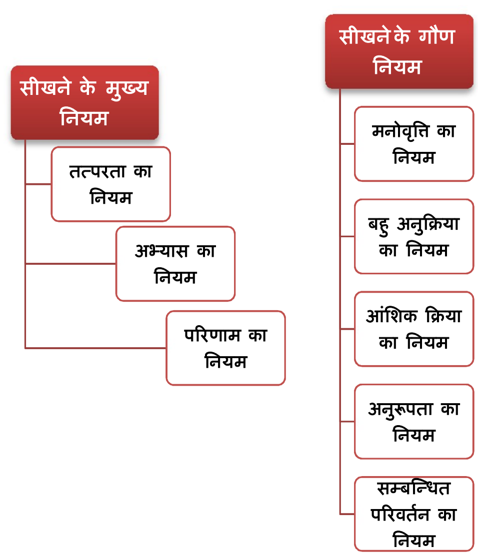

1 मुख्य नियम

तत्परता का नियम– जब हम किसी कार्य को सीखने के लिए तैयार या तत्पर होते हैं, तो हम उसे शीघ्र सीख लेते हैं। किसी समस्या को हल करने के लिए प्रयत्नशील होना तत्परता कहलाती है। यदि बच्चे में गणित के प्रश्न हल करने की इच्छा है, तो तत्परता के कारण वह उनको अधिक शीघ्रता और कुशलता से करता है। काम करने में आनंद एवं संतोष का अनुभव करेगा। इसके विपरीत सीखने के लिए तैयार नहीं होने की स्थिति में बच्चे को सीखने की क्रिया से असन्तोष मिलता है और प्रायः वह खीज (Annoyance) उठता है।

अभ्यास का नियम- इस नियम का तात्पर्य-"अभ्यास कुशल बनाता है (Practice makes a man perfect) यदि हम किसी कार्य का अभ्यास करते हैं तो हम उसे सरलतापूर्वक करना सीख जाते हैं और उसमें कुशल हो जाते हैं। हम बिना अभ्यास किए साइकिल पर चढ़ने में या कोई खेल खेलनें में कुशल नहीं हो सकते हैं। यदि हम किसी सीखे हुए कार्य का अभ्यास नहीं करते हैं, तो उसे हम भूल जाते हैं। अभ्यास से सीखना स्थायी होता है इसे थार्नडाइक ने उपयोग का नियम (Law of use) और बिना अभ्यास से ज्ञान विस्मृत हो जाता है, इसे अनुपयोग का नियम (Law of Disuse) कहा है।प्रायः हम उस कार्य को ज्यादा अच्छे से करना चाहते है जिसका परिणाम हमारे लिए हितकर होता है, जिससे हमें सुख एवं सन्तोष मिलता है। यदि हमें किसी कार्य को करने या सीखने में कष्ट होता है तो हम उस क्रिया को नहीं दोहराते हैं। थार्नडाइक के अनुसार जिस कार्य से सन्तोष

होता है उससे उद्दीपन अनुक्रिया सम्बन्ध दृढ़ होता है और जिस कार्य से असन्तोष होता है उससे यह सम्बन्ध कमजोर होता है।

2. सीखने के सहायक या गौण नियम (Secondary Laws of Learning)

थार्नडाइक ने सीखने के पाँच गौण नियमों का प्रतिपादन किया है, इन नियमों का महत्व मुख्य नियम से कम है, इसलिए ये गौण नियम है।

<u>मनोवृत्ति का नियम-</u> जिस कार्य के प्रति हमारी अभिवृत्ति या मनोवृत्ति रहती है उसी अनुपात में हम उसको सीखते हैं। अनुकूल मनोवृत्ति होने पर बालक शीघ्र सीखता है तथा प्रतिकूल मनोवृत्ति होने पर बालक के सीखने में बाधाएँ आती है।

<u>बहु अनुक्रिया का नियम-</u> इस नियम के अनुसार जब हम कोई नया कार्य करना सीखते हैं तब हम उसके प्रति विभिन्न प्रकार की अनुक्रियाएँ करते हैं, इनमें से कुछ अनुक्रियाएँ लक्ष्य प्राप्ति में सहायक नहीं होती हैं, उन्हें हम छोड़ देते हैं, और फिर भूल जाते हैं। हम उन्हीं अनुक्रियाओं का चयन करते हैं, जो लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होती है, इसे ही सीखना कहते हैं।

आंशिक क्रिया का नियम- थार्नडाइक का मानना है कि यदि बच्चों के सामने किसी समस्या को छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर प्रस्तुत किया जाए और एक-एक भाग का समाधान किया जाए तो बच्चे पूरी समस्या को शीघ्रता एवं सुगमता से समझकर सम्पूर्ण कार्य को पूरा कर सकते हैं।

शिक्षक को भी चाहिए कि वे बच्चों के समक्ष समस्या प्रस्तुत करते समय उनके विभिन्न अंगों के विषय में बताएं और उन्हें अलग अलग हलकर सम्पूर्ण समस्या का समाधान करने के लिए प्रेरित करे । बच्चों को अंश से पूर्ण की ओर बढ़ने के अवसर प्रदान करना चाहिए।

अनुरूपता का नियम- जब व्यक्ति के सामने कोई नई समस्या आती है तो वह अपने पूर्व के अनुभवों एवं प्रयत्नों को स्मरण करता है और उनसे तुलना करता है कि उसके अनुसार क्रिया कर समस्या का समाधान खोजने का प्रयत्न करता है।

सम्बन्धित परिवर्तन का नियम- इस नियम को साहचर्य परिवर्तन का नियम भी कहते हैं। इसके अनुसार कोई भी अनुक्रिया जिसे करने की क्षमता व्यक्ति में होती है, उसे एक नए उद्दीपन के द्वारा भी उत्पन्न की जा सकती है। इसमें क्रिया का स्वरूप वहीं रहता है पर परिस्थिति में परिवर्तन हो जाता है। शिक्षक को कक्षा में अच्छी आदतों एवं सकारात्मक अभिरुचि को उत्पन्न करना चाहिए ताकि छात्र उनका उपयोग अन्य परिस्थितियों में भी कर सकें।

थार्नडाइक के सीखने के सिद्धांत का शिक्षा में महत्व

थार्नडाइक के सीखने के सिद्धांत का शिक्षा में महत्व निम्नलिखित हैं।

छात्र प्रोत्साहन – इस सिद्धान्त से यह पता चलता हैं कि बालक को किसी कार्य को सीखने के लिए प्रेरणा, लक्ष्य, उद्देश्य का होना आवश्यक हैं। अतः प्रयास एवम त्रुटि द्वारा कि छात्र प्रोत्साहित होते है।

अभ्यास पर बल – यह सिद्धांत छात्रों को अभ्यास पर बल देने के लिए प्रेरित करता हैं।

समस्या समाधान – बालको को अनेक प्रकार की समस्यायों का सामना करना पड़ता हैं। परंतु हम यह देखते हैं। हर एक जगह पर शिक्षक की उपलब्धता नही होती हैं। इस वजह से वह अपने प्रयत्नों के द्वारा ही अपनी समस्या का समाधान ढूढता हैं।

थार्नडाइक के सिद्धांत की आलोचना

थार्नडाइक के सिद्धांत की आलोचना निम्नलिखित हैं।

1.इस सिद्धान्त में कहा गया हैं। की सीखने की गति धीमी धीमी होती हैं। परंतु जो सफलता प्राप्त होती हैं। वह अचानक से प्राप्त होती हैं।

2.प्रयत्न और भूल द्वारा दिखने में काफी समय लगता हैं।इससे शक्ति और समय दोनों काफी नष्ट होते है।

3 थार्नडाइक ने सीखने की प्रक्रिया में दंड व पुरस्कार दोनों पर बल दिया।विशेषकर पुरस्कार व सीखने में दंड का भी अपना एक विशेष महत्व है।
4.इस सिद्धान्त में रटने पर अधिक बल दिया गया हैं

निष्कर्ष- अधिगम प्रक्रिया में सीखने के नियमों का विशेष महत्व है। सीखने की तत्परता, लगातार अभ्यास, संतोषजनक परिणाम से इच्छित फल की प्राप्ति होती हैं। हमें हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए की हमें अपने आस पास की क्रियाओ प्रतिक्रियाओ से शिखते रहना चाहिये फिर चाहे वो मनुष्य हो या किसी भी प्रकार के जीव-जन्तु क्यू की एक चीटी भी हमें कभी भी हर न मानने की सिख देती है हम निरंतर प्रयास करके लगन के साथ तय किये गए लक्ष्य को पा सकते है